कृषि वानिकी का महत्व विषय पर अमृत महोत्सव कार्यक्रम की रिपोर्ट

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा भारत की स्वतन्त्रता की 75 वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में भारत का अमृत महोत्सव के अंतर्गत 18 नवम्बर, 2021 को धवाली, त॰ - धर्मपुर, जिला - मंडी, हिमाचल प्रदेश में कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसका मुख्य उद्देश्य किसानो को कृषि-वानिकी के महत्व पर चर्चा करना था तथा ग्रामीणों को जागरूक करना था । इस कार्यक्रम में धर्मपुर उपमंडल की लोंगनी, धर्मपुर, धवाली, बनाल, भरतपुर और थनेड पंचायतों से 50 ग्रामीणों ने भाग लिया ।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि **श्री महेंदर सिंह ठाकुर, जल शक्ति, बागवानी एवं राजस्व मंत्री, हिमाचल प्रदेश सरकार** थे । **डॉ. एस.एस. सामंत, निदेशक,** हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला ने मुख्य अतिथि का स्वागत किया और कार्यक्रम में आने हेतु संस्थान का आमंत्रण स्वीकार करने के लिए धन्यवाद दिया । उन्होनें आशा जताई कि कार्यक्रम से जुड़े सभी लोग लाभान्वित होंगे । डॉ. सामंत ने संक्षेप में संस्थान के बारे में अवगत करवाया । उन्होने बताया कि संस्थान शिवद्वाला, लोगनी में वन विज्ञान केंद्र खोल रहा है जिसमे माननीय मंत्री जी का पूर्ण सहयोग मिल रहा है । चन्दन एक महत्वपूर्ण वृक्ष प्रजाति है, इसे उगाकर प्रदेश की आर्थिकी में महत्वपूर्ण योगदान हो सकता है । उन्होनें बताया कि शिवालिक क्षेत्र चन्दन के लिए उपयुक्त है । **डॉ. जगदीश सिंह, वैज्ञानिक-एफ., प्रभागाध्यक्ष, विस्तार प्रभाग** ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया एवं अमृत महोत्सव के इस कार्यक्रम के उद्देश्य के बारे में बताया । **डॉ. संदीप शर्मा, वैज्ञानिक जी एवं समूह समन्वयक अनुसंधान** ने संस्थान में किए गए कार्य तथा वर्तमान में किए जा रहे शोध एवं विकास कार्यों के बारे में बताया ।

माननीय मंत्री श्री महेंदर सिंह ठाकुर ने धर्मपुर क्षेत्र के शिवद्वाला लोंगनी में बन विज्ञान केंद्र खोलने के लिए हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान का आभार प्रकट किया और बताया कि इसका कार्य क्षेत्र बढ़ाया जाए और संस्थान अच्छे कार्य करे जिससे क्षेत्र के लोगों को लाभ मिले । हमारे वन ऑक्सिजन सिलिंडर कि तरह है इन्हीं वनों कि वजह से हमारा पर्यावरण उत्तम है । परंतु उन्होने चिंता जताई कि वन धीरे धीरे कम हो रहें है और उनकी उत्पादकता भी घट रही है । कृषि और वानिकी का गहरा संबंध है यह एक दूसरे के पूरक हैं । उन्होने आगे बताया कि हिमाचल प्रदेश सरकार निचले क्षेत्रों के लिए शिवा नामक बागवानी प्रोजेक्ट शुरू कर रहा है जिसके तहत लगभग 4000 हेक्टेयर भूमि पर 60 लाख फलदार पौधें लगाये जाएंगे । हिमाचल प्रदेश सरकार लोगों की आय वृद्धि हेतु मशरूम परयोजना शुरू करेगी जिसके तहत किसानो एवं महिलाओं को प्रशिक्षित किया जाएगा और उन्हें मशरूम उगाने हेतु 20 ट्रे कम्पोस्ट और बीज

दिया जाएगा । यह कार्य किसानों को आत्म-निर्भर बनाने में सहायक सिद्ध होगा । उन्होनें वानिकी क्षेत्र में अपने अनुभव भी सांझा किए और बताया कि प्रयोग के तौर पर अपने घर के पास कुछ चन्दन वृक्ष लगाए जो बढ़िया उग रहे हैं । उन्होने हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान से भी आग्रह किया कि वो चन्दन पर कार्य करें और क्षेत्र में चन्दन के वन तैयार करनें में अपना योगदान दे । उन्होनें कहा कि टौर के पत्ते लोगों कि आय में महत्वपूर्ण योगदान देते है । अतः इसकी नर्सरी भी तैयार करें और लोगों को पौधरोपण हेतु पौधे वितरत करें । इसके अलावा चारा बैंक का भी विकास करें ताकि चारे कि जरूरत भी पूरी हो सके । सरकार शिवद्वाला में एक बढ़ी गौशाला विकसित कर रहा है इसके लिए भी चारा बैंक महत्वपूर्ण साबित होगा । उन्होने संस्थान को अपनी और सरकार की ओर से पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन दिया ।

डॉ॰ एस एस सामंत नें बताया कि चन्दन के जंगल सबसे अधिक कर्नाटक और तमिलनाडु राज्यों में पाये जाते हैं । इसके अलावा चन्दन केरल, महाराष्ट्र , ओड़ीशा और उत्तर प्रदेश में भी पाया जाता है । चन्दन प्राकृतिक वास में 650 से 1200 मीटर की ऊंचाई तक उगता है । हिमाचल का निचला क्षेत्र भी चन्दन के लिए उपयुक्त है, संस्थान इस दिशा में कार्य करेगा । उन्होनें मंत्री महोदय को विश्वास दिलाया कि संस्थान उनके द्वारा सुझाए गए सुझावों पर अमल करेगा । डॉ॰ जगदीश सिंह वैज्ञानिक ने कृषि वानिकी: आय का एक विकल्प पर अपने विचार लोगों के समक्ष सांझा किए । **डॉ॰ संदीप शर्मा, वैज्ञानिक जी एवं समूह समन्वयक अनुसंधान** ने उन्नत गुणवत्ता वाले पौधें तैयार करने हेतु किसान पौधशाला की स्थापना एवं प्रबंधन पर जानकारी दी । हिमाचल प्रदेश में चन्दन वृक्ष उगाने की संभावनाओं के बारे में बताया । उन्होनें बताया कि सबसे पहले जरूरी है कि उच्च गुणवत्ता वाले बीजों से ही नर्सरी में पौध तैयार हो । **डॉ॰ अश्वनी टपवाल, वैज्ञानिक-एफ़** ने कृषि वानिकी वृक्षों में लगने वालें रोगों और उनके उपचार के बारे में बताया । **डॉ॰ पवन राणा, वैज्ञानिक-ई** ने कृषि वानिकी वृक्षों में कीटों के प्रकोप और उनके प्रबंधन के बारे में बताया । इस कार्यक्रम के दौरान राकेश शर्मा आईपीएच एक्सईएन धर्मपुर, दीक्षांत शर्मा एसडीओ, आईपीएच धर्मपुर, योगेश शर्मा, एसडीओ, पीडबल्यूडी धर्मपुर, राकेश कटोच डीएफ़ओ, जोगिन्द्रनगर, देश राज ठाकुर, रेंज ऑफिसर, कमलाह धर्मपुर भी उपस्थित रहे । डॉ॰ सामंत, निदेशक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान ने सभी प्रतिभागियों का तथा कार्यक्रम के आयोजन से जुड़े सभी लोगों के प्रयासों की सराहना की तथा सभी वक्ताओं के योगदान को संक्षेप में बताते हुये उनका धन्यवाद किया । कार्यक्रम के अंत में **डॉ॰ जोगिंदर चौहान, मुख्य तकनीकी अधिकारी** ने मुख्य अतिथि, संस्थान के निदेशक, अन्य सभी वक्ताओं, वैज्ञानिकों, अधिकारियों, कर्मचारियों तथा ग्रामीणो का कार्यक्रम में भाग लेने और कार्यक्रम को सफल बनाने में योगदान देने के लिए धन्यवाद दिया ।

कार्यक्रम की झलकियां

विषय : कृषि वानिकी का महत्व

विषय : कृषि वानिकी का महत्व

18/11/2021 12:3

विषय : कृषि वानिकी का महत्व

विषय : कृषि वानिकी का महत्व
दिनांक : 18 नवम्बर, 2021

मीडिया कवरेज

हिमाचल दस्तक

शुरू हो रहा शिवा बागवानी प्रोजेक्ट

4000 हेक्टेयर भूमि पर लगाए जाएंगे 60 लाख फलदार पौधे

टौंर के पत्तों की भी की जाएगी नर्सरी, बढ़ेगी किसानों की आय

वरिष्ठ संवाददाता। शिमला

प्रदेश का निचला क्षेत्र भी चंदन के लिए उपयुक्त

हिमाचल का निचला क्षेत्र भी चंदन के लिए उपयुक्त है। हिमाचल प्रदेश में चंदन वृक्ष उगाने की संभावनाओं के बारे में बताया। सबसे पहले जरूरी है कि उच्च गुणवत्ता वाले बीजों से ही नर्सरी में पौध तैयार हो। डॉ. अश्वनी टपवाल ने कृषि वानिकी वृक्षों में लगने वाले रोगों और उनके उपचार के बारे में बताया। इस कार्यक्रम के दौरान राकेश शर्मा आईपीएच एचआईएन धर्मपुर, दीक्षांत शर्मा एसडीओ आईपीएच धर्मपुर, योगेश शर्मा एसडीओ पीडब्ल्यूडी धर्मपुर, राकेश कटोच डीएफओ जोगिंद्रनगर, देशराज ठाकुर रेंज ऑफिसर कमलाह धर्मपुर भी उपस्थित रहे।

हिमाचल प्रदेश के निचले क्षेत्रों में शिवा नामक बागवानी प्रोजेक्ट शुरू किया जा रहा है। इसके तहत लगभग 4000 हेक्टेयर भूमि पर 60 लाख फलदार पौधे रोपे जाएंगे। इसके अलावा लोगों को टौंर के पत्तों के बारे में भी बताया गया। उन्होंने कहा कि लोगों कि आय में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं अतः इसकी नर्सरी भी तैयार करें और लोगों को पौधरोपण के लिए पौधे वितरत करें। इसके अलावा चारा बैंक का भी विकास करें, ताकि चारे कि जरूरत भी पूरी हो सके। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा भारत की स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में भारत का अमृत महोत्सव के तहत धवाली, धर्मपुर, में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसका मुख्य उद्देश्य किसानों को कृषि-वानिकी के महत्व पर चर्चा करना था तथा ग्रामीणों को जागरूक करना था। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महेंद्र सिंह ठाकुर, जल शक्ति, बागवानी एवं राजस्व मंत्री रहे। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला के निदेशक डॉ. एसएस सामंत ने मुख्य अतिथि का स्वागत किया। डॉ. एसएस सामंत ने बताया कि चंदन के जंगल सबसे अधिक कर्नाटक और तमिलनाडु राज्यों में पाए जाते हैं। इसके अलावा चंदन केरल, महाराष्ट्र, ओड़ीशा और उत्तर प्रदेश में भी पाया जाता है। चंदन प्राकृतिक वास में 650 से 1200 मीटर की ऊंचाई तक उगता है।

अमर उजाला

धर्मपुर के शिवद्वाला, लौंगनी में खोले जाएंगे वन विज्ञान केंद्र

संवाद न्यूज एजेंसी

प्रदेश में चंदन की खेती पर काम करे हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान : महेंद्र

मंडी। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान प्रदेश में चंदन की खेती पर कार्य करे, ताकि प्रदेश के बागवानों को इसका भरपूर फायदा मिले।

यह बात हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला की ओर से धर्मपुर के धवाली में आयोजित एक कार्यक्रम में बागवानी मंत्री महेंद्र सिंह ने कही। कार्यक्रम में धर्मपुर उपमंडल की लौंगनी, धर्मपुर, धवाली, बनाल, भरतपुर और थनेड पंचायतों से 50 ग्रामीणों ने भाग लिया। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला के निदेशक एसएस सामंत ने बताया कि संस्थान शिवद्वाला और लौंगनी में वन विज्ञान केंद्र खोलेगा। चंदन की खेती करने से प्रदेश के बागवानों की आर्थिकी मजबूत होगी।

मंत्री महेंद्र सिंह ने कहा कि शिवद्वाला और लौंगनी में हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान के केंद्र खुलने से बागवानों को फायदा होगा। उन्होंने चिंता जताई कि वन धीरे धीरे कम हो रहे हैं। प्रदेश सरकार निचले क्षेत्रों के लिए शिवा नामक बागवानी प्रोजेक्ट शुरू कर रही है। इसके तहत लगभग 4000 हेक्टेयर भूमि पर 60 लाख फलदार पौधे रोपे जाएंगे। लोगों की आय में वृद्धि के लिए मशरूम परियोजना शुरू की जाएगी। इसमें किसानों और महिलाओं को प्रशिक्षित किया जाएगा। उन्हें मशरूम उगाने के लिए 20 ट्रे, कम्पोस्ट और बीज दिया जाएगा। यह कार्य किसानों को आत्म निर्भर बनाने में सहायक सिद्ध होगा। डॉ. एसएस सामंत ने बताया कि चंदन के जंगल सबसे अधिक कर्नाटक और तमिलनाडु राज्यों में पाए जाते हैं। हिमाचल का निचला क्षेत्र भी चंदन के लिए उपयुक्त है।